महादेवी वर्मा के काव्य में सौंदर्य-भावना

डॉ अंजु

सहायक प्रोफसर हिंदी विभाग

श्री गुरु नानक देव खालसा कॉलेजएदिल्ली

छायावादी काव्य के विकास में महादेवी वर्मा का योगदान अप्रतिम है। वे अपने समय के कवियों में एक आलौकिक भाव जगत का सृजन कर छायावादी काव्यधारा को एक नयी सौंदर्य दृष्टि प्रदान करती है। यही कारण है कि उन्हें छायावादी काव्यधारा में रहस्यवादी भावधारा की प्रमुख कवयित्री माना जाता है।

प्रेम मानव जीवन का सर्वाधिक व्यापक एवं प्रभावकारी भाव है। यह विवेचन पीछे किया जा चुका है। सृष्टि के मूल में निहित काम भावात्मक रूप में प्रेम ही है। लौकिक एवं अलौकिक दोनों स्तरों पर प्रेम का व्यापक चित्रण काव्य में हुआ हैए महादेवी वर्मा भी इसका अपवाद नहीं है। उनके काव्य का तल हैए भावना की प्राणवान शक्ति में रमा प्रियए जिसे अनुभूति द्वारा लौकिक संस्पर्श देकर ही व्यक्त किया है।

"कौन आया था न जाने
स्वप्न में मुझको जगाने
याद में उन उगलियों कीए
है मुझे पर युग बिताने।
मिलन का मत नाम लेए
मै विरह मे चीर हूं।
शलभ में शापमय वर हूं।"1

अज्ञात प्रियतम की मधुमय मुस्कान उन्हें जिस पीड़ा में डुबो देती हैएवह मधुमय है। महादेवी वर्मा ने इस अनुभूति को लौकिक प्रतीको के माध्यम से खुलकर व्यक्त किया है–

"बिछाती थी सपनो के जाल
तुम्हारी वह करूणा की कौरए
गई वह अधरो की मुस्कान

मुझे मधुमय पीड़ा में बोर"।2

योगी जिसे भोग सेएभक्त जिसे भक्ति सेएदार्शनिक जिस दर्शन से प्राप्त करता है। महादेवी उसे अपने विगलित अहं को समर्पित शक्ति से प्राप्त कर लेना चाहती है। उनकी प्रेम भावना एक स्थूल शरीर आकर्षण मात्र तक सीमित नहीं अपितु उसमें आत्म के अहं का विसर्जन एवं समपूर्ण का उत्कर्ष है। इस आलौकिक प्रेम पात्र के प्रति महादेवी वर्मा में असीम अनुराग एवं आत्म समर्पण का भाव है–

मधुर राग तु मै स्वर संगम

तु असीम मै सीमा का भ्रम

काया छाया में रहस्यमय्।

प्रेयसि प्रियतम का अभिनय क्या।

निर्झर की गतिशील लहरों से उद्गम धारा एवं उसकी निराली कल-कल का अभिराम मादकगान भी महादेवी को आकर्षित नहीं करता। विरह वेदना की एकांत साधना ने उनके जीवन को समाधि बना डाला है। अत: निर्झर का सौंदर्य भी उनकी इस समाधि को भंग न करे यही उनकी आकांक्षा है। महादेवी ने अपने एकांकीपन को विरागी की संज्ञा भी दी जाती है जिसे वसंतएसौरभ-उन्माद कहीं न लुभा ले। अत: यह बसंत से कहती है–

"विजन वन में बिखरा कर राग

जग सोते प्राणों की प्यासए

ढाककर सौरभ में उन्माद

नशीली फैलाकर निश्वास

लुभाओ इसे न मुग्ध वसंत

विरागी है मेरा एकांत"।4

नीहार में जहां विरह कवयित्री की पीड़ा को तीव्रता प्रदान कर उसे उन्माद की स्थिती तक ले जाता है वहां रश्मि का अपेक्षाकृत प्रौढ़ चिंतन आदि में छपे अवसान और अंत की सृजन में परिणति को स्वीकार कर इस संसार को एक सूत्र सा अनुभव करता है जिसमें सुख-दुख एवं जय-पराजय गुथे हुए हैं। इस प्रकार सुख-दुख को जीवन का एक कर्म मान कर कवयित्री अपनी वेदना के भार को मानों हलका कर लेती है–

"आदि में छीप जाता अवसान

अंत में बनता नव्य विधानए

सूत्र ही है क्या यह संसार

गुथे जिसमें सुख-दुख जय-हार्।"5

अत: उनकी दार्शनिक मान्यता है कि जीवन में मिलन-विरह सुख-दुख दोनों का ही महत्तव है इन दोनों के सम्मिलन से ही जीवन में एकरूपता आती है-

"गूंथे विषाद के मोती

चांदी सी स्मित के डोरेए

हो मेरे लक्ष्य क्षितिज की

आलौक-तिमिर दो छोरे।"6

भावों की विविधता और सुंदरता उनकी वेदना को आकर्षण प्रदान करती हैं। भाव जगत में जीवन की संध्या की अनुभूति करने वाली कवयित्री अपनी इस भाव विविध सुंदरता का सांध्य गमन के विविध आकर्षक रंग उन्हें अपने ही रंगीले भावों का प्रतिबिम्ब दिख पड़ते हैं इसी प्रकार एक अन्य गीत में कवयित्री ने करूणामय सजल जीवन का साम्य पावस की बदली से किया है–

"मैं नीर भारी दुख की बदली

विस्तृत नभ का कोई कोनाए

मेरा नकभी अपना होना

परिचय इतना इतिहास यहीं

उमड़ी कल थी मिट आज चली"।7

कवयित्री महादेवी वेदना के स्वरो में ही प्रिय का सम्मान किया है–

"प्रिय मेरे गीले नयन बनेगे आरती

श्वासो में सपने कर गुम्पित

बंदरवार वेदना चर्चित

भर दुख से जीवन का घट नित

मूक क्षणों में मधुर भंरूगी भारती"।8

उपमान रूप में कभी-कभी महादेवी ने प्रकृति से तारत्म्य के लिए विरोधी तत्वों को भी जुटाया है। इस प्रकार कि कविताओं में उन्होंने अपनी विशालता एवं अभाव हिनता का परिच्य दिया हैकृ

जग करूण-करूण मैं मधुर-मधुरए

दोनों मिलकर देते रज-कणए

चिर करूण मधुर सुंदर-सुंदर

जग पतझर का निरव रसालए

पहने हिम जल की अश्रुमाला

मैं पिक बन गाती डाल-डालए

प्रकृति से अधिक सुखी और वैभव शालिनी कवि की आत्मा किस प्रकार प्रकृति को सौंदर्य और श्रृंगार से मुक्त बनाती हैए कहीं-कहीं महादेवी के काव्य में प्रकृति उपमान से उपमेय भी बन गयी है–

कनक से तिन मोती सी रात

सुनहली सांझ गुलाबी प्रातः

मिटाता रंगता बारम्बार

कौन जग का यह चित्राधारद्ध

शुन्य नभ में तम का चुम्बन

जला देता असंख्य उदगम

सारांश रूप से कहा जा सकता है कि महादेवी वर्मा की सौंदर्य भावना की मूल प्रेरणा उनकी व्यथा-कथा या वेदनानुभूति है। वे करूणा की साकार प्रतिमा हैं। उनका हृदय जिन कोमल भाव तंतुओं से निर्मित हुआ है वे सब करूणा के ही उपदान मात्र है। काव्य का जन्म तो करूणा से ही हुआ है। हिंदी साहित्य जगत में महादेवी वर्मा का नाम अमर रहेगा।

संदर्भः

1ण महादेवी वर्माए सांध्यागीतएपृ.326
2ण वहीएनिहारएपृ.35
3ण वहीएपृ.126

4प वहीएपृ. 62
5प वहीएरश्मिएपृ. 127
6प वहीएपृ. 128
7प वहीएसांध्यागीतएपृ. 326
8प वहीएपृ. 301
9प वहीएनिरजाएपृ. 265
10प वहीएपृ. 266